2

सिंधु घाटी सभ्यता की चित्रकला

पिछले पाठ में हमने प्रागैतिहासिक काल के शैलचित्रों के विषय में जाना। अब इस पाठ में हम सिंधु घाटी सभ्यता की चित्रकला के विषय में जानेंगे। भारतीय कला का प्राचीनतम ज्ञात काल सिंधु घाटी सभ्यता और संस्कृति का है जो ईसापूर्व तीसरी सहस्त्राब्दी से लगभग 1700 वर्ष ईसापूर्व तक फली-फूली। इस महान सभ्यता की खोज बड़े आश्चर्यजनक ढंग से उन्नीसवीं शताब्दी में हुई। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो वे महत्वपूर्ण स्थान हैं, जहाँ सिंधु सभ्यता के अवशेष मिले हैं।

इन स्थानों पर मिले अवशेषों से ज्ञात होता है कि यह सभ्यता अवश्य ही नगरीय सभ्यता थी। इसके निर्माण कार्यों में उन्नत सामग्री का प्रयोग किया गया था तथा घरों में ऊपरी मंजिल, स्नानागार तथा कुँए आदि स्थित थे। मंदिर, सभागार, अनाज-भण्डार, कार्यशाला स्थल, सामूहिक आवास और बाज़ारों का अस्तित्व था। उन्नत ढंग की पानी की निकास-व्यवस्था का पाया जाना इस विकसित सभ्यता की कहानी बताता है। ऐसी सामाजिक तथा आर्थिक तौर पर विकसित सभ्यता में कला व शिल्प का विकास स्वाभाविक ही है। इस अध्याय में हम केवल इस सभ्यता के उन चित्रों तक ही सीमित रहेंगे जो मिट्टी के बर्तनों पर बनाए गए हैं। इन बर्तनों का उपयोग भण्डारण और मृतकों को दफ़नाने के समय किया जाता था। दफ़नाने के समय उपयोग किए गए बर्तनों में अनाज, आभूषण, और घरेलू सामान आदि बड़ी मात्रा में मिले हैं। इसके पीछे यह विश्वास निहित था कि यह समान मृतक के काम आएगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप :

- सिंधु घाटी के बर्तनों पर बने चित्रों के प्रकारों के विषय में लिख सकेंगे;
- हड़प्पा-प्रणाली की कला का संक्षिप्त विवरण दे सकेंगे;

- हड़प्पाकालीन विभिन्न बर्तनों पर बनी चित्रकृतियों को सूचीबद्ध कर सकेंगे;
- हड़प्पाकालीन मिट्टी के बर्तनों के ज्यामितीय आकारों की व्याख्या कर सकेंगे;
- हड़प्पा काल में प्रयुक्त रूपांकनों को पहचानकर उनको प्रस्तुत कर सकेंगे।

2.1 सिंधुकालीन बर्तनों पर पशु-आकृतियाँ

बुनियादी सूचना

सिंधुसभ्यताकालीन बर्तनों पर बाघ, बैल, हिरण, सर्प तथा मछलियों आदि की आकृतियाँ आमतौर पर चित्रित की गई हैं। जमीन के नीचे से प्राप्त एक बर्तन पर हिरण के शिकार का दृश्य चित्रित किया गया है।

सिंधुकालीन बर्तन अच्छी तरह पकाए गए, चमकदार और गहरे लाल हैं। लगभग सभी बर्तनों के निचले हिस्से को काले पट्टे से रंगा गया है। विभिन्न आकार और रूपों के बर्तनों को गोलाकार बनाया गया है। सिंधु घाटी में बर्तनों को खाना बनाने, खाना परोसने, भंडारण तथा दफ़नाने आदि विभिन्न प्रयोजनों के लिए काम में लाया जाता था। अधिकांश चित्रांकित बर्तन भंडारण के लिए प्रयोग में लाए गए, क्योंकि खनिज रंग खाने के बर्तनों पर टिक नहीं पाते थे।

चित्र 2.1: परोसने हेतु बर्तन जिस पर सर्प आकृति चित्रित हैं

शीर्षक : **परोसने बर्तन पर सर्प की आकृति चित्रित हैं**

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : मिट्टी पर खनिज रंग

काल : हड़प्पा काल

शैली : हड़प्पा-शैली

सामान्य परिचय

यह चौड़े-खुले मुँह वाला तथा कम ऊँचाई का बर्तन है। संभवत: इसका प्रयोग खाना परोसने हेतु किया जाता होगा। इस बर्तन की समूची बाहरी सतह पर एक सर्प लिपटा हुआ अंकित किया गया है। काले रंग से चित्रित इस सर्प के शरीर की समांतर रेखाओं ने बर्तन की गोलाई को घेरा हुआ है। लहरदार पड़ी रेखाओं का यह रूपांकन बहुत सुंदर है। बर्तनों को चाक पर बनाया गया तथा आग में पकाया गया है। बर्तनों पर वांछित रंग प्राप्त करने हेतु आवश्यक कौशल अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। सिंधु सभ्यता के कुंभकार इस कौशल में अत्यन्त दक्ष थे।

2.2 हड़प्पा के बर्तन : भण्डारण मर्तबान

आइए, अब हड़प्पाकालीन बर्तनों पर बने चित्रों के बारे में जानें।

बुनियादी सूचना

पशुओं की आकृति के शैलीगत निरूपण में सिंधु घाटी सभ्यता के कुंभकारों ने अपने प्रागैतिहासिक पूर्वजों का अनुसरण किया। पशुओं की आकृतियों की सहजता बहुत ही रोचक है। यह कहना कठिन है कि यह चित्रकारी कुंभकारों द्वारा की गई है। संभवत: इन बर्तनों की सज्जा हेतु विशेषज्ञ चित्रकार नियुक्त किए गए थे।

शीर्षक : **बैल एवं हिरण चित्रित बर्तन**

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : मिट्टी पर खनिज रंग

काल : हड़प्पा काल, 2500 ईसापूर्व

शैली : हड़प्पा शैली

चित्र 2.2: भण्डारण-मर्तबान जिस पर बैल एवं हिरण चित्रित हैं

सामान्य विवरण

यह मर्तबान चाक पर, हाथों से आकार देकर ढाला गया है। संभवत: इसका उपयोग तेल, अनाज को लाने ले-जाने और भोजन सुरक्षित रखने हेतु किया जाता रहा होगा। इस सुन्दर लाल मर्तबान के समूचे शरीर पर काली धारियों के मध्य पशु आकृतियों से सज्जा की गई है। मर्तबान के मध्य भाग में एक बड़ा बैल बनाया गया है जिसकी सजावट आड़ी-तिरछी रेखाओं से बने पैटर्न एवं मोटी धारियों से की गई है। बैल की लम्बोतरी आकृति हड़प्पा की टैराकोटा पर बनी बैल आकृति से साम्य रखती है। इस कला में बैल, बल एवं शक्ति के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

2.3 चौड़े मुंह वाला पात्र, हड़प्पा के बर्तन

बुनियादी सूचना

हड़प्पा सभ्यता के अवशेषों में विभिन्न आकारों तथा मापों में अनेक प्रकार के बर्तन प्राप्त हुए हैं। इन बर्तनों का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों हेतु किया जाता था। इस बर्तन का प्रयोग संभवत: भोजन परोसने हेतु कटोरे अथवा प्याले के रूप में किया जाता होगा।

चित्र 2.3: बाघ चित्रित पात्र

शीर्षक	:	**बाघ चित्रित पात्र**
कलाकार	:	अज्ञात
माध्यम	:	मृदा पर खनिज रंग
काल	:	हड़प्पा काल
शैली	:	हड़प्पा शैली

सामान्य विवरण

बाघ की आकृति को बर्तन की चौड़ाई को ध्यान में रखते हुए खूबसूरती से डिज़ाइन किया गया है। लम्बी पतली बाघ की आकृति को बर्तन में बनाई गई गोलाकार काली धारियों के मध्य कुशलतापूर्वक संयोजित किया गया है। बाघ के समूचे शरीर को एक दूसरे को काटती तिरछी रेखाओं से भर दिया गया है। बाघ के ऊपर उसके समूचे शरीर की लम्बाई के समानान्तर गोल बिंदु चित्रित किए गए हैं जिसने पूरे डिजाइन को भी रुचिकर बन दिया है। रिक्त स्थान को भरने हेतु किए गए डिजाइन का नियोजन अद्‌भुत है। बाघ की आकृति के अमूर्त होने के बावजूद चित्रकार उसकी विशिष्टिता और पहचान बनाए रखने में सफल रहा है।

पाठगत प्रश्न 2.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. हड़प्पा के बर्तनों का मूल रंग क्या है?

   (क) सफ़ेद, काला (ख) आसमानी, नीला

   (ग) लाल, बफ (घ) उपर्युक्त सभी

2. बर्तनों तथा मर्तबानों पर किन पशुओं के चित्र बनाए गए हैं?

   (क) बाघ, सर्प (ख) बैल, मछली

   (ग) बैल, पक्षी (घ) उपर्युक्त सभी

2.4 सिंधु घाटी सभ्यता के बर्तनों पर ज्यामितिक आकार

बुनियादी सूचना

सिंधु घाटी सभ्यता से मिले भण्डारण और दफ़नाने के समय प्रयुक्त मर्तबानों पर अनेक प्रकार की ज्यामितिक (डिज़ाइन) आकृतियाँ देखने को मिलती हैं। ज्यामितिक डिज़ाइनों में प्राचीनतम नमूने ईसापूर्व तीसरी शताब्दी के मिले हैं। बर्तनों, तश्तरियों, प्यालों और खाना पकाने के बर्तनों पर कहीं-कहीं रमणीय ज्यामितिक डिज़ाइन पाए गए हैं। कई बार ज्यामितिक डिज़ाइनों को पशु आकृतियों के मध्य संयोजित किया गया है, जिससे वे अत्यंत रुचिकर पैटर्न बनाते हैं और कभी-कभी वे अपने आपमें स्वतंत्र डिज़ाइन के रूप में चित्रित किए गए हैं।

सामान्यत: गोलाकार, वर्गाकार तथा उनके विविध रूप प्रयुक्त किए गए हैं। अन्य आकारों में विभिन्न मोटाई की धारियाँ हैं जिन्हें बर्तन के चारों ओर घेरते हुए चित्रित किया गया है। बर्तनों का रंग हल्का पीला-लाल है जिन पर काली रेखाएँ चित्रित हैं। ज्यामितिक आकारों से किया गया अलंकरण आकर्षक और सराहनीय है। सिंधु सभ्यता से प्राप्त प्यालों व मर्तबानों पर बने ज्यामितिक डिज़ाइन तत्कालीन कलाकारों द्वारा शक्तिशाली प्रतीकों के सृजन करने की क्षमता को दर्शाते हैं।

शीर्षक : **शंकु-आकार या चोटीदार तथा फैले किनारे के मुँहवाला मर्तबान**

कलाकार : अज्ञात

माध्यम : मृदा पर खनिज रंग

काल : हड़प्पाकाल, 2500 ईसापूर्व

शैली : हड़प्पा-शैली

चित्र 2.4: शंकु-आकार या चोटीदार फैले किनारे के मुँहवाला मर्तबान

सामान्य परिचय

ज्यामितिक डिज़ाइनों को व्यवस्थित तरीके से संयोजित किया गया है। पकाने के उपरान्त चित्रित भागों को छोड़कर शेष बर्तन लाल रंग का हो गया है। काले रंग से चित्रित किये गए डिज़ाइन अधिकांशत: मछली के शल्क (अर्द्ध गोलाकार) के आकार में हैं। गोलाकार पैटर्न की पुनरावृत्ति से यह अनुमान होता है कि इन्हें धागे और तीली की सहायता से नर्म मिट्टी पर बनाया गया होगा, जबकि अन्य आकृतियों को बनाना काफ़ी कठिन रहा होगा। इन सबसे यह स्पष्ट होता है कि सिंधु सभ्यता के कलाकारों को ज्यामितिक बनावट की अच्छी समझ थी तथा वे ज्यामितिक सिद्धांतों से परिचित थे। जिस दक्षता से गोलाकार पैटर्न की पुनरावृत्ति की गई है तथा उन्हें सुन्दर अर्द्धगोलाकार पैटर्न से एक-दूसरे पर चढ़ाया गया है, वह दर्शनीय है। प्रस्तुत चित्र में दर्शाये गए दो बड़े बर्तन एक ही स्थान से प्राप्त हुए थे। चित्र में दर्शाये छोटे बर्तन का संबंध बड़े बर्तन की अपेक्षा प्राचीन काल से है।

2.5 ज्यामितिक मछली (मोटिफ़) चित्रित बर्तन

बुनियादी सूचना

सिंधु घाटी से प्राप्त बर्तनों पर चित्रकारी से की गई सज्जा उस समय के चित्रकारों की महानता को दर्शाती है। बर्तन सुन्दर हैं और उन्हें उचित अनुपात में आकार दिया गया है। बर्तनों के आकार के प्रकार बहुत कम हैं।

चित्र 2.5: ज्यामितिक मछली (मोटिफ़) चित्रित बर्तन

शीर्षक	:	**ज्यामितिक मछली (मोटिफ़) चित्रित बर्तन**
माध्यम	:	मृदा पर खनिज रंग
काल	:	हड़प्पाकाल 2500 ई.पू.
शैली	:	हड़प्पा शैली

सामान्य परिचय

चाक पर बनाया गया यह बर्तन मेहरागढ़ से प्राप्त हुआ है। इसकी दीवारें बहुत पतली तथा नाजुक हैं। इसे बहुत ही अच्छी किस्म की रवेदार मिट्टी से बनाया गया है। बर्तन को पकाने से पहले उस पर काली रेखाओं से चित्रकारी की गई है और बाद में पीला, सफेद तथा लाल रंग लगाया गया है। सिंधु घाटी के बर्तनों में प्याले, तश्तरी तथा पतली गर्दन वाले बर्तन आदि सम्मिलित थे, जिन पर सुंदर ज्यामितिक पैटर्न और धारियाँ चित्रित की गई थीं। इस पाठ में उपर्युक्त बर्तन, जिस पर मछली का मोटिफ़ बनाया गया है, उस पर चित्रित त्रिभुजाकार रेखाओं वाले मछली पैटर्न को अत्यन्त सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। मछली के शरीर के अन्दर त्रिभुजाकार काली रेखाओं से सजाया गया है। चित्रकार ने बर्तन को सजाने हेतु उसके ऊपरी भाग को त्रिभुजाकार वाली रेखाओं से सजाया है। रंग-योजना अत्यन्त सादगीपूर्ण और समरसता से परिपूर्ण है।

पाठगत प्रश्न 2.2

1. सिंधु घाटी से प्राप्त बर्तनों पर चित्रित मछली के शल्क पैटर्न पर तीन या चार पंक्तियाँ लिखिए।

2. ज्यामितीय शैली के मछली (मोटिफ़) चित्रित बर्तन पर तीन या चार पंक्तियाँ लिखिए।

3. चित्रकारों द्वारा किन ज्यामितिक पैटर्न का प्रयोग किया गया है?

क्रियाकलाप

सिंधु घाटी सभ्यता के तीन बर्तनों के आकार बनाइए। उन पर किन्हीं तीन मोटिफ़ों और प्रतीकों को अंकित कीजिए। उन अभिप्रायों या प्रतीकों के नाम भी लिखिए।

बर्तन	प्रतीक

2.6 सिंधु घाटी बर्तनों पर पक्षी आकृतियाँ

बुनियादी सूचना

सिंधुकालीन चित्रकारों द्वारा बर्तनों पर वनस्पति तथा ज्यामितिक पैटर्न के साथ अत्यन्त सौन्दर्यपूर्ण ढंग से चित्रित की गई पक्षी आकृतियाँ उनकी सौन्दर्यपरक संवेदना के विस्तार को दर्शाती हैं। पक्षी की आकृतियों के निर्माण में रेखाओं का अंकन अत्यंत अनुशासित रूप में किया गया है। पक्षियों का चित्रण लाल अथवा हल्की पीली पृष्ठभूमि पर काली रेखाओं द्वारा किया गया है।

हड़प्पा-काल के भण्डारण हेतु प्रयुक्त होने वाले मर्तबानों पर भी सुन्दर पक्षी आकृतियाँ चित्रित की गई हैं। बेल-बूटों तथा ज्यामितिक मोटिफ़ों के मध्य संयोजित मोर जीवन्त और सक्रिय प्रतीत होता है। एक समान मोटाई वाली काली रेखाओं का प्रवाह आश्चर्यजनक है। यह रचना बहुत सादा परन्तु सौन्दर्यपूर्ण है।

शीर्षक : **मोर आकृति चित्रित भंडारण मर्तबान**

माध्यम : मृदा पर खनिज रंग

काल : हड़प्पा काल 2500 ई.पू.

शैली : हड़प्पा-शैली

चित्र 2.6: मोर आकृति चित्रित मर्तबान

सामान्य परिचय

हड़प्पाकालीन इस मर्तबान पर पंख फैलाए मोर पक्षी की मनोहर आकृति देखी जा सकती है। ज्यामितिक सज्जा के मध्य संयोजित यह पक्षी जीवंत तथा सक्रिय दिखाई देता है। मर्तबान की गर्दन एवं तली को घेरे समान मोटाई वाली काली रेखाएँ लयात्मक हैं। अलंकरण सादगी भरा है। सिंधु घाटी के कुंभकारों ने कुछ आकृतियों का विकास कर लिया था जो बर्तनों के आकार के लिए उपयुक्त थीं। उन्होंने इन आकारों को और विकसित किया तथा उनके अनुपात और अलंकरण को परिष्कृत किया।

पाठगत प्रश्न 2.3

1. पक्षी के मोटिफ से चित्रित दो बर्तनों के दो उदाहरण लिखिए।
2. बेलबूटों के मध्य पक्षी आकृति का रेखांकन किस प्रकार किया गया है?
3. पक्षियों के रूपाकारों के बारे में दो पंक्तियाँ लिखिए।

आपने क्या सीखा

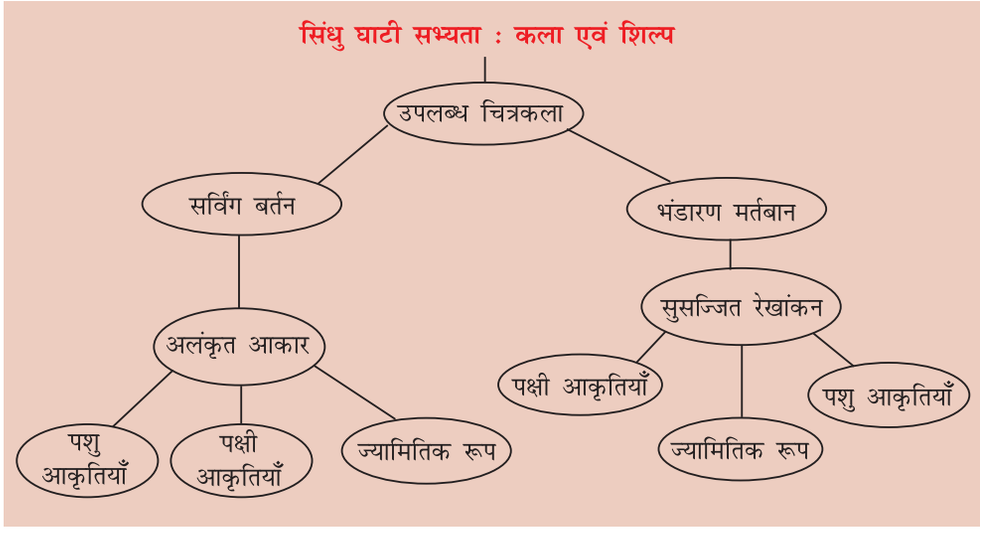

सीखने का प्रतिफल

शिक्षार्थी

- रंगीन बर्तनों पर किए गए चित्रांकन का प्रयोग अन्य वस्तुओं पर करते हैं।
- मोटिफों एवं प्रतीकों का उपयोग करते हुए सुंदर रचनाएँ करते हैं।

पाठांत प्रश्न

1. दो तीन पंक्तियों में सिंधु बर्तनों के माप, आकार और संरचना का वर्णन कीजिए।
2. बर्तनों पर बनाए गए डिज़ाइन एक जैसे हैं अथवा उनमें विविधता है?
3. सिंधु घाटी के बर्तनों पर चित्रित की गई पशु आकृतियों के बारे में लिखिए।
4. सिंधु घाटी के बर्तनों के रंग एवं चित्रित विषयों की प्रस्तुति का वर्णन कीजिए।
5. सिंधु घाटी के चित्रकारों ने किन विषयों पर चित्र बनाए हैं?
6. तिथि का आकलन करते हुए लिखिए कि ये बर्तन किस काल के हैं?
7. सिंधु घाटी सभ्यता में बर्तनों का प्रयोग किन कार्यों हेतु किया गया था?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1

1. (ग) लाल और हल्का पीला
2. (घ) उपर्युक्त सभी

2.2

1. सिंधु घाटी से बर्तनों में मछली के शल्क पैटर्न सबसे लोकप्रिय ज्यामितिक डिजाइन था। यह पैटर्न, सिंधु चित्रकारों द्वारा प्रयुक्त किये गए सबसे महत्वपूर्ण आकार गोलाकार के ही विविध रूप थे।
2. इस पाठ में उल्लिखित यह बर्तन जिस पर ज्यामितिक मछली पैटर्न बना है, को सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है जिसमें मछली के शरीर के भीतरी भाग में स्वाभाविक त्रिभुजाकार रेखाओं से बने मोहक पैटर्न चित्रित किए गए हैं। बर्तन का ऊपरी भाग भी त्रिभुजाकार काली रेखाओं से अलंकृत किया गया है।
3. मुख्यत: वृत्ताकार और उसके विविध रूप, जैसे- मछली के शल्क पैटर्न। वर्गाकार, आयताकार और एक दूसरे को काटती तिरछी रेखाओं से बने पैटर्न भी प्रयुक्त किए गए हैं।

2.3

1. मोर की आकृति से चित्रित लम्बोतरा भण्डारण मर्तबान तथा गोल पात्र जिस पर बेल-बूटे एवं पक्षी चित्रित हैं।
2. सक्रिय पक्षी आकृति बेल-बूटों के मध्य समायोजित की गई है जिसमें लयात्मक गतिशीलता है।
3. लम्बोतरा मर्तबान, जिस पर मोर आकृति चित्रित है, इस पर समान रूप से प्रवाहमान रेखाओं से चित्रण किया गया है। मोर की आकृति क्रियाशील प्रतीत होती हैं।

शब्दकोश

प्रतीक	जिसके द्वारा किसी विचार को ग्राफिक या आकार द्वारा दर्शाया जाता है।
चमकीला	चमकीली तथा चिकनी परत (मिट्टी के बर्तनों पर)
साँचे में ढला हुआ	मूल सामग्री से बनी हुई वस्तु में आकार को नया रूप देना
बर्तन	किसी सामग्री को रखने वाला पात्र
धारियाँ	रेखाएँ
अद्‌भुत	अत्यंत सुंदर, अत्यंत विस्मयकारी
पॉलिक्रोम	रंग-बिरंगा
चाक	कुम्हार का चक्र, जिस पर मिट्टी से बर्तन बनाए जाते हैं।